भगवान श्रीकृष्ण स्वयं को बँधने देते हैं

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

कई युगों पहले भारत में, भगवान ने श्रीकृष्ण के रूप में अपनी बाल्यावस्था का समय गोकुल के हरे-भरे खेतों और बगीचों में बिताया। यह उन सभी किसानों और ग्वालों के लिए अति आनन्द का समय था, जिन्हें उस समय गोकुल में रहने का सौभाग्य प्राप्त था। प्रतिदिन बालकृष्ण नई-नई लीलाएँ करते जिन्हें सभी देखते, ये लीलाएँ उन ग्वालबालों के लिए अद्‌भुत और शिक्षाप्रद होती थीं।

ऐसे ही एक दिन, कृष्ण की माता यशोदा अपने घर के बाहर आँगन में बैठी थीं और उनके सामने मिट्टी का एक बड़ा मटका रखा हुआ था। मटके में मलाई भरी हुई थी और उसके बीच में रस्सी से बँधी लकड़ी की एक मोटी मथनी रखी हुई थी। यशोदा रस्सी को बारी-बारी से दोनों ओर खींच रही थीं जिससे मथनी पहले एक ओर फिर दूसरी ओर घूम रही थी। वे मक्खन निकाल रही थीं।

वे रस्सी को आगे व पीछे खींच रही थीं, और जैसे-जैसे मलाई गाढ़ी होकर मक्खन बनने लगी, उनका चेहरा पसीने से चमकने लगा और उनके बाल माथे पर चिपकने लगे। वे अपने कार्य में इतनी मग्न थीं कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कृष्ण घर के अन्दर से बाहर आ रहे हैं।

“मैय्या?” उनका मधुर, मोहक स्वर आया। वे उस समय नन्हें बालक ही थे।

“मैय्या?” यशोदा ने चौंक कर देखा। कृष्ण उनके सामने खड़े थे, उनके चेहरे पर काजल फैला हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे कि वे रो रहे थे।

“मैय्या,” यशोदा कुछ पूछें कि क्या हुआ, उससे पहले ही वे चिड़चिड़े स्वर में कहने लगे, “मुझे भूख लगी है! कुछ खाने को दो।”

उनके ऐसा कहने पर यशोदा मुस्कराईं, उनके कन्धे सहज हो गए। “इतनी-सी बात?” वे बोलीं। उन्होंने कृष्ण को अपनी गोद में उठा लिया, उन्हें थोड़ा-सा माखन दिया और पुनः मथनी घुमाने लगीं।

यद्यपि, कुछ समय बाद यशोदा फिर रुकीं। कृष्ण ने उनकी ओर देखकर आँखें झपकाई। माँ के चेहरे पर घबराहट दिखाई दी।

“दूध!” वे चिल्लाईं। “मैंने उसे चूल्हे पर रखा था! वह किसी भी क्षण उबल जाएगा!

उन्होंने एकाएक कृष्ण को गोद से उतारा और घर के अन्दर दौड़ीं। कृष्ण ने उन्हें जाते देखा। उनकी भौंहें सिकुड़ गईं, होंठ नीचे झुक गए और ज़ोर से कंपकंपाने लगे। ऐसा लगा कि उनकी मैय्या को उनसे भी अधिक चिन्ता दूध की थी!

उन्होंने माखन के मटके की ओर देखा। अचानक उन्हें एक विचार आया। वे मटके के पास आए, मथनी को खींचकर बाहर निकाला और फिर—तड़ाऽऽऽऽऽक। एक ही झटके में, उन्होंने मथनी को मटके पर दे मारा।

मटके के टुकड़े चारों ओर फैल गए। चिकना सफ़ेद माखन चारों ओर ज़मीन पर बिखर गया। मक्खन व्यर्थ न जाए इसलिए कृष्ण ने पास ही में रखे एक पात्र में, जितना आ सकता था उतना मक्खन भर लिया। उन्होंने पात्र को अपने सीने से लगाया, अपनी उंगलियों को चाटा और फिर अपने इनाम को लेकर बाहर भाग निकले।

मटके के टूटने की आवाज़ सुनकर यशोदा पता लगाने के लिए बाहर दौड़ीं। परन्तु तब तक, कृष्ण तो जा चुके थे। उन्होंने अपने दिन भर के श्रम के अवशेषों को चारों ओर देखा, मटके के टुकड़े आँगन की सीढ़ी के पास तितर-बितर होकर पड़े थे, और ज़मीन मक्खन से चिकनी हो गई थी।

यशोदा ने अपनी आँखें बन्द की और अपना माथा ठोका। वे जानती थीं कि उनका कृष्ण नटखट है, किन्तु यह तो कुछ ज़्यादा ही हो गया था। वह हमेशा ऐसा सब उपद्रव क्यों करता रहता है? कितनी

बार वह माखन चुराएगा? निःश्वास छोड़ते हुए उन्होंने अपनी साड़ी का पल्लू कमर में खोंसा और कृष्ण को ढूँढने बाहर निकल गईं।

अब कृष्ण जो भगवान के अवतार थे, वे जब तक चाहते अपने को छिपा सकते थे। स्वयं को दूसरों के लिए प्रकट करना उनकी अपनी इच्छा व उनकी करुणा पर निर्भर था। इसलिए, वे घर के पास वृक्ष पर, अपने स्थान पर बैठ कर उन्हें देखते रहे। यशोदा उनका नाम पुकारती हुई चारों ओर दौड़ती हुई उन्हें झाड़ियों में खोज रही थीं और पड़ोसियों से अपने माखनचोर पुत्र का पता पूछ रही थीं।

कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहा और अब यशोदा कुछ चिन्तित दिखाई देने लगी थीं, तो कृष्ण को उन पर दया आ गई। उन्होंने उनका ध्यान बटोरने के लिए वृक्ष की पत्तियों को हिलाया।

यशोदा ने तुरन्त पत्तियों की आवाज़ की ओर देखा। वह वहाँ था, उनका पुत्र जो उसी वृक्ष पर बैठे वानरों की ओर माखन के गोले उछालने में व्यस्त व मस्त था। कुछ गोले फेंकने के बाद वह रुकता और स्वयं भी थोड़ा माखन खा लेता था।

“कृष्ण!” यशोदा ने कठोर स्वर में आवाज़ दी। “वृक्ष से तुरन्त उतरो। तुम्हारी शैतानियाँ बहुत हो गईं!”

कृष्ण ने अपनी मोहक मुस्कान उन पर डाली और आज्ञाकारी बच्चे की तरह वृक्ष से उतरने लगे। वे माँ के सामने आकर खड़े हो गए, उनकी आँखें मासूमियत के साथ विस्तृत हो रही थीं। उनके हाथ व मुँह माखन से सने हुए थे।

“आप मुझे ढूँढ रही थीं, मैय्या?”

“क्या, क्या मैं तुम्हें ढूँढ रही थी?” वे अविश्वास से बोलीं। उन्होंने अपना सिर हिलाया, बिना एक भी शब्द बोले, कृष्ण को हाथ से खींचकर अपने घर की ओर चल दीं।

घर के सामने पहुँचते ही वे बोलीं “यहीं खड़े रहो।” “*हिलना मत,* मैं अभी आती हूँ।” वे घर के भीतर चली गइ॰

एक क्षण बाद वे फिर बाहर आइ,-उनके हाथ पर एक लम्बी रस्सी लिपटी हुई थी।

“मैं तुम्हें अभी इस खम्भे से बाँधने वाली हूँ,” घर के साथ लगे एक खम्भे की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा। “तुम्हारा भागना बन्द। माखन की मटकियाँ फोड़ना बन्द।”

कृष्ण ने अपनी उसी मोहक मुस्कान के साथ माता यशोदा की ओर देखा। उनके हाव-भाव इतने दिव्य थे कि यशोदा मुड़कर देखने को विवश हो गइ॰ सच तो यह था कि जब से उन्होंने कृष्ण को वृक्ष पर खोज लिया था, उसी क्षण से उनका हृदय आर्द्र था और भाव-विभोर हो गया था। किन्तु इस समय यह करना आवश्यक था। ऐसी हरकतें अब और नहीं चल सकती थीं। उन्हें रस्सी से बाँधने के लिए आगे बढ़ते समय एक क्षण लेकर उन्होंने अपने हृदय को कठोर बना लिया।

उन्होंने रस्सी का एक सिरा पकड़ा और अपने हाथ को खम्भे के दूसरे सिरे तक ले गइ॰ किन्तु जब उन्होंने उसे कृष्ण के पेट तक खींचने का प्रयास किया तब एक अद्‌भुत बात हुई। रस्सी छोटी पड़ गई!

यशोदा को कुछ समझ नहीं आया। उन्हें पूरा भरोसा था कि रस्सी काफ़ी लम्बी रहेगी। वास्तव में, उन्होंने सोचा था कि रस्सी आवश्यकता से *अधिक ही* लम्बी होगी। उन्होंने और ज़ोर से खींचने का प्रयास किया, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। रस्सी भगवान को बाँध नहीं सकी।

अपनी बात को पूरा करने के लिए, माता यशोदा और ज़्यादा रस्सी लेने चली गइ॰ उन्होंने उसी रस्सी के साथ इस नई रस्सी को जोड़ दिया। रस्सी की संयुक्त लम्बाई पूरे आँगन के बराबर हो गई। सन्तुष्ट होकर यशोदा अपने पुत्र की ओर मुड़ीं और रस्सी को उसके चारों तरफ़ लपेट दिया।

यद्यपि, बिना किसी कारण के, और बिना किसी तार्किक स्पष्टीकरण के, पुनः वैसा ही हुआ। रस्सी अब भी छोटी पड़ गई।

"क्या?" यशोदा चकित हो गइ॰ वे निराश थीं और समझ नहीं पा रही थीं कि उन्हें क्या करना चाहिए, फिर भी उन्होंने रस्सी को खींचना जारी रखा। उन्होंने लम्बी से लम्बी रस्सी के टुकड़े लिए और इस आशा से उसके साथ जोड़ा कि अन्ततः उन्हें पर्याप्त लम्बाई की रस्सी मिल जाएगी जो कृष्ण को बाँध सकेगी। इस तरह से घंटों बीत गए। यशोदा के हाथ थककर सुस्त पड़ने लगे। उन्हें श्वास लेने में भी कष्ट होने लगा। उन्होंने कितना भी प्रयत्न किया किन्तु रस्सी हर बार दो अंगुल छोटी ही रही।

अन्ततः, यशोदा ने हाथ से रस्सी को छोड़ दिया। उन्होंने अपने पुत्र की ओर ऐसे देखा, जैसे वह उसे पहली बार देख रही हों। उनका मुँह हल्का-सा खुला था और उनकी भौंहों के बीच एक रेखा उभरने लगी। कृष्ण, जो पूरे समय शान्त थे, सादगी से उनकी ओर देखने लगे। उनकी आँखें चमक रही थीं।

जब यशोदा निरन्तर उनकी ओर देख रही थीं — घबराहट, आश्चर्य में बदल गई और आश्चर्य आदर में बदल गया—उन्हें अपने अन्तर में एक रूपान्तरण महसूस हुआ। प्रेम, अपनी बड़ी-बड़ी हिलोरों के साथ, उनके हृदय से बह निकला। आदर और भक्ति ने उनके पूरे अस्तित्त्व को धो दिया। आँखों से झर-झर आँसू बहने लगे।

कृष्ण मुस्कराए। "मैय्या," वे बोले, "क्या तुम फिर से प्रयास करना चाहती हो?"

और इसी के साथ, भगवान ने रस्सी के सिरों को पकड़ा और उनके हाथ में दे दिए।

©२०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह कहानी श्रीमद्भागवतम् अथवा भागवत् पुराण में वर्णित भगवान कृष्ण की प्राचीन कथाओं में से एक कथा से प्रेरित है। इस कहानी को अकसर दामोदर-लीला कहा जाता है। दामोदर भगवान श्रीकृष्ण का एक नाम है; जिसका अर्थ है, "वह जिसके पेट पर रस्सी बँधी है।" श्रीविष्णुसहस्त्रनाम के पाठ में गाए जाने वाले नामों में यह भी एक नाम है।